



पशु चिकित्सा कर्मियों की कोविड-19 महामारी में आपदा प्रबंधन की भूमिका

के.एल. दहिया¹, हरप्रीत सिंह² एवं आदित्य³

¹पशु चिकित्सक, राजकीय पशु हस्पताल, हमीदपुर (कुरुक्षेत्र) हरियाणा।

²वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केन्द्र (करनाल), लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा।

³स्नातकोत्तर छात्र, डॉ. वाई. एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी (हमीरपुर), हिमाचल प्रदेश।

विश्व व्यापी कोविड-19 महामारी हाल ही में खोजे गये आर.एन.ए. नोवेल कोरोना वायरस के संक्रमण से होता है जो अभी भी बहुत तेज गति से मनुष्यों से मनुष्यों में फैल रहा है। इस वायरस का 75 से 80 प्रतिशत जिनोम सार्स वायरस के जिनोम से मेल और इसके जैसे लक्षण उत्पन्न करता है जिस कारण इस वायरस को सार्स कोरोनावायरस-2 भी कहा जाता है।

मनुष्यों में रोग के लक्षण

कोविड-19 रोग के कारण मनुष्यों में श्वास नली में संक्रमण होने पर बुखार, खाँसी, गले में खराश, सिर दर्द इत्यादि सामान्य लक्षण देखने को मिलते हैं। इसके बाद रोगी को सांस लेने में तकलीफ या तेज-तेज सांस चलना, खाँसी जैसे लक्षण दिखायी देते हैं जो आमतौर पर बच्चों में ज्यादा दिखायी देते हैं। लेकिन ज्यादातर व्यस्कों में

बुखार, सांस संबंधी लक्षण होते हैं। यदि यह स्थिति बच्चों में हो जाती है तो उन्हें खाँसी, माँ का दूध और पेय पदार्थ लेने असक्षमता, शारीरिक थकान और तेज सांस इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं। रोगी की शारीरिक स्थिति और गंभीर होने पर एक्युट रेस्पेयरटरी डिस्ट्रेस सिंड्रोम हो जाता है। रोगी की स्थिति बिगड़ने पर उसके शरीर के अन्य अंग भी प्रभावित होने लगते हैं। वयस्कों में मानसिक स्थिरता भंग होना, सांस लेने में परेशानी, मूत्र विसर्जन में कमी, तेज हृदय गति या निम्न रक्तचाप, तेज ठण्ड लगना इत्यादि उम्मित हैं। वहीं बच्चों में तापमान और श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या में असमानता दिखायी देती है। अत्याधिक गंभीर अवस्था के दौरान वयस्कों में उच्च रक्तचाप बने रहना, तो वहीं बच्चों में मानसिक भ्रम एवं उच्च रक्तचाप लक्षण होते हैं।



रोग से बचाव

कोविड-19 के संक्रमण के कारण मनुष्यों में तीव्र गति से संक्रमण होता है लेकिन आंकड़ों के अनुसार मृत्युदर बहुत कम है। किसी भी व्यक्ति विशेष को इस महामारी को हल्के में नहीं लेना चाहिए क्योंकि दुनियाभर में कोविड-19 के चल रहे परीक्षणों में अलाक्षणिक मरीजों का अनुपात काफी संख्या में पाया गया है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर व्यस्क ही होते हैं। इस रोग के संक्रमण से बचने लिए फेस मास्क पहनने के साथ-साथ एक-दूसरे से 2 मीटर की दूरी, बार-बार कम से कम 20 सेकण्ड तक हाथों को साबुन-पानी से धोना, आवश्यक हो तो हाथों में दस्ताने भी पहनें, भीड़ वाले क्षेत्रों से जाने से बचना, अफवाहों की ओर ध्यान न देना इत्यादि से ही बचाव संभव है।

पशुओं में कोविड-19

हालांकि, दिसंबर 2019 के अंत में मनुष्यों को प्रभावित करने वाले इस रोग के पशुओं खासतौर से कुत्तों, बिल्लियों, बाघ को संक्रमित करने के कुछ प्रमाण अवश्य मिले हैं लेकिन अभी तक पशुओं से मनुष्यों में फैलने के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं लेकिन पशुओं में अन्य कई तरह के कोरोनावायरस अवश्य ही हैं जो आसानी से पशुओं एवं मनुष्यों को

प्रभावित करते आये हैं। अतः यह ध्यान देने योग्य बात है कि कोविड-19 संक्रमित रोगियों को पशुओं के संपर्क में आने से बचना चाहिए अन्यथा इस वायरस के पशुओं में प्रवेशोप्रांत आनुवंशिक परिवर्तन होने के बाद गंभीर उपभेद (Strains) पैदा होने की संभावना से नहीं नकारा जा सकता है।

पशुस्वास्थ्य कर्मियों की पशु सेवा

पशुओं के कोरानावायरस का संक्रमण एवं इस महामारी के दौरान पशुपालकों को होने वाली समस्याओं को कम करने के लिए पशुस्वास्थ्य कर्मियों की विशेष भूमिका रही है जो विश्वव्यापी महामारी काल में भी बेजुबान पशुओं की सेवा करके पशुपालकों को पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। बेशक, अभी तक किसी भी पशु स्वास्थ्य कर्मी की यह रोग रिपोर्ट नहीं हुआ है लेकिन उचित बचावों की अनदेखी भी नहीं करें।

पशुस्वास्थ्य कर्मियों पशुपालक प्रेम

इस मुश्किल दौर में भी पशुपालकों की सेवा के लिए उनके पशुधन उत्पादों को बढ़ावा देते रहें। हालांकि ग्रामीण आंचल में पशुओं के लिए हरे चारे की परेशानी प्रतीत नहीं हो रही है लेकिन दाना-मिश्रण के लिए उनको बाजार पर निर्भर रहना पड़ता है जहाँ उनको आसानी से कोविड-19 का संक्रमण होने का खतरा है



और उनके संपर्क में आने से पशु स्वास्थ्य कर्मी भी इस रोग की चपेट में आ सकते हैं। अतः पशुपालकों को आगाह करते रहें कि जब भी घर बाहर निकलें तो मुंह पर फेस मास्क अवश्य पहनें, बाजार में खरीदारी करते समय एक-दूसरे से दो मीटर की दूरी अवश्य रखें, विभिन्न सतहों को छूने से बचें, समय-समय पर अपने हाथ साबुन-पानी से धोएं और हाथों पर हैंड सेनेटाइजर लगाते रहें, एक-दूसरे से हाथ मिलाने की बजाय हाथ जोड़ कर प्रणाम करें और हाथ उठा कर ही अभिवादन करें। इसी प्रकार पशुस्वास्थ्य कर्मी भी इन बातों का अनुसरण करें। यह तथ्य है कि “कल जिंदा थे तभी आज हैं, आज हैं तभी तो कल होंगे, नहीं तो कल किसने देखा कि बचे रहेंगे।

पशुस्वास्थ्य कर्मियों कोविड-19 महामारी आपदा प्रबंधन

हालांकि समय-समय पर विभागीय परशिक्षणों के माध्यम से पशु स्वास्थ्य कर्मियों को विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों से बचाव हेतु आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाता है। फिर भी, कोविड-19 महामारी के इस दौर में पशु चिकित्सा कर्मी अपने आप को बचाते हुए पशुपालकों के हित में

पशु आपदा प्रबंधन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

- पशु चिकित्सा कर्मी फेस मास्क, दस्ताने तथा डांगरी या अप्रेन अवश्य पहनें, यदि संभव हो तो इन्हें हस्पताल से आते समय, हस्पताल में ही उतार कर साबुन-पानी से धोएं।
- बार-बार गुनगुना (हल्का गर्म पानी) पीते रहें।
- अपने पशुओं का उपचार करवाने के लिए हस्पताल में आये पशुपालकों को एक-एक करके ही अन्दर आने दें और उसके पशु का उपचार होने के बाद ही दूसरे का प्रवेश करवाएं।
- एक उपचाराधीन पशु के साथ कम से कम व्यक्तियों को ही अन्दर आने दें।
- पशु हस्पताल में ज्यादा पशुपालकों को एकत्रित न होने दें।
- पशुपालकों के हस्पताल में प्रवेशोप्रांत उनके हाथों पर हैंड सेनेटाइजर अवश्य लगवाएं।
- पशु हस्पताल के प्रांगण में नियमित रोगाणु नाशक घोल का छिड़काव करवाते रहें।
- हस्पताल में हाथ धोने के लिए साबुन-पानी का उपयोग बार-बार करते रहें और



- हैंड सेनेटाइजर को अपने हाथों पर बार-बार लगाते रहें।
- पशुपालकों, स्वयं, एवं स्टाफ को हस्पताल की दीवारों एवं अन्य वस्तुओं को छूने से परहेज करें।
 - पशुपालकों से बातचीत करते समय दो मीटर की दूरी अवश्य रखें।
 - यदि किसी कारणवश पशुपालकों से कुर्सी पर बैठकर बातचीत होती है तो उन कुर्सियों को पशुपालकों के हस्पताल से बाहर जाते ही जीवाणुरहित अवश्य करें।
 - पशु हस्पताल में आये पशुओं को छूने से पहले और बाद में साबुन-पानी से हाथ अवश्य धोएं एवं हाथों पर हैंडसेनेटाइजर अवश्य लगाएं।
 - तालाबन्धी के कारण पशुपालकों को आर्थिक मंदी जैसी परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ रहा है। अतः ऐसे समय में उनके पशुओं के इलाज में भी आर्थिक समस्या को ध्यान में अवश्य रखें।
 - यदि पशुओं के इलाज के लिए पशुपालक के घर द्वार जाना ही पड़े तो उचित सावधानी बर्तने की कोशिश अवश्य करें और अनावश्यक अन्य लोगों से न मिलें।
 - हस्पताल के कार्यों को निपटाने के बाद घर पहुंचने से पहले घर पर फोन पर घर आने की सूचना दें और घर में प्रवेश करने से पहले अपने सामान इत्यादि को बाहर ही रख कर जीवाणुरहित करें और नहाने के लिए बाथरूम में जाते समय घर के दरवाजे, कुण्डे इत्यादि और अन्य सामान को नहीं छूएं और नहाने से पहले साबुन-पानी से अपने हाथों को कम से कम 20 सेकण्ड तक अवश्य धोएं। नहाने से पहले अपने कपड़ों को एक बाल्टी में डिट्रजेंटयुक्त पानी में डाल दें। नहाने के बाद फिर से अपने हाथों पर हैंड सेनेटाइजर लगाएं और कुछ समय बीत जाने के बाद ही परिवार के सदस्यों से मिलें।
 - रोग की संभावना होने के परिस्थिति में अपना परीक्षण अवश्य करवाएं।
 - अंत में यही कहा जा सकता है कि इस विश्व व्यापी कोविड-19 महामारी से जंग जीतने के लिए, मानव एवं पशु भलाई के लिए यही कहा जा सकता है कि स्वयं भी बचें और दूसरों को भी बचाएं।
- डरो ना कोरोना के वार से, समझो कोरोना के वार को।**
- फेस मास्क और साबुन पानी से, निष्क्रिय करें कोरोना के परहार को।**